अथ प्रथमोऽध्यायः

अर्जुनविषादयोग

(कुरुक्षेत्र के युद्धप्रांगण में सैन्यनिरीक्षण)

धृतराष्ट्र उवाच।
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।।१।।

धृतराष्ट्रः उवाच=राजा धृतराष्ट्र ने कहा; **धर्मक्षेत्रे**=धर्मभूमि; **कुरुक्षेत्रे**=कुरुक्षेत्र में; **समवेताः**=इकट्ठे हुए; **युयुत्सवः**=युद्ध की इच्छावाले; **मामकाः**=मेरे; **पाण्डवाः च**=और पाण्डु के पुत्रों ने; **एव**=भी; **किम्**=क्या; **अकुर्वत**=किया; **सञ्जय**=हे सञ्जय।

अनुवाद

धृतराष्ट्र ने कहा, हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्र होकर युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया?।।१।।

तात्पर्य

श्रीमद्भगवद्गीता वस्तुतः व्यापक स्तर पर पठित भागवत-विद्या है, जो गीता माहात्म्य में साररूप से समाहृत है। वहाँ उल्लेख है कि कृष्णभक्त के आश्रय में ही गीता का मनोयोग से अध्ययन करना चाहिए और इस प्रकार स्वार्थप्रेरित मनमाने अर्थों के आवरण से मुक्त उसका यथार्थ तात्पर्य समझना चाहिए। भगवद्गीता के उस विशुद्ध ज्ञान का उदाहरण स्वयं भगवद्गीता में है। गीता को उसी भाँति